ग़ज़ल 18

-रविशंकर श्रीवास्तव

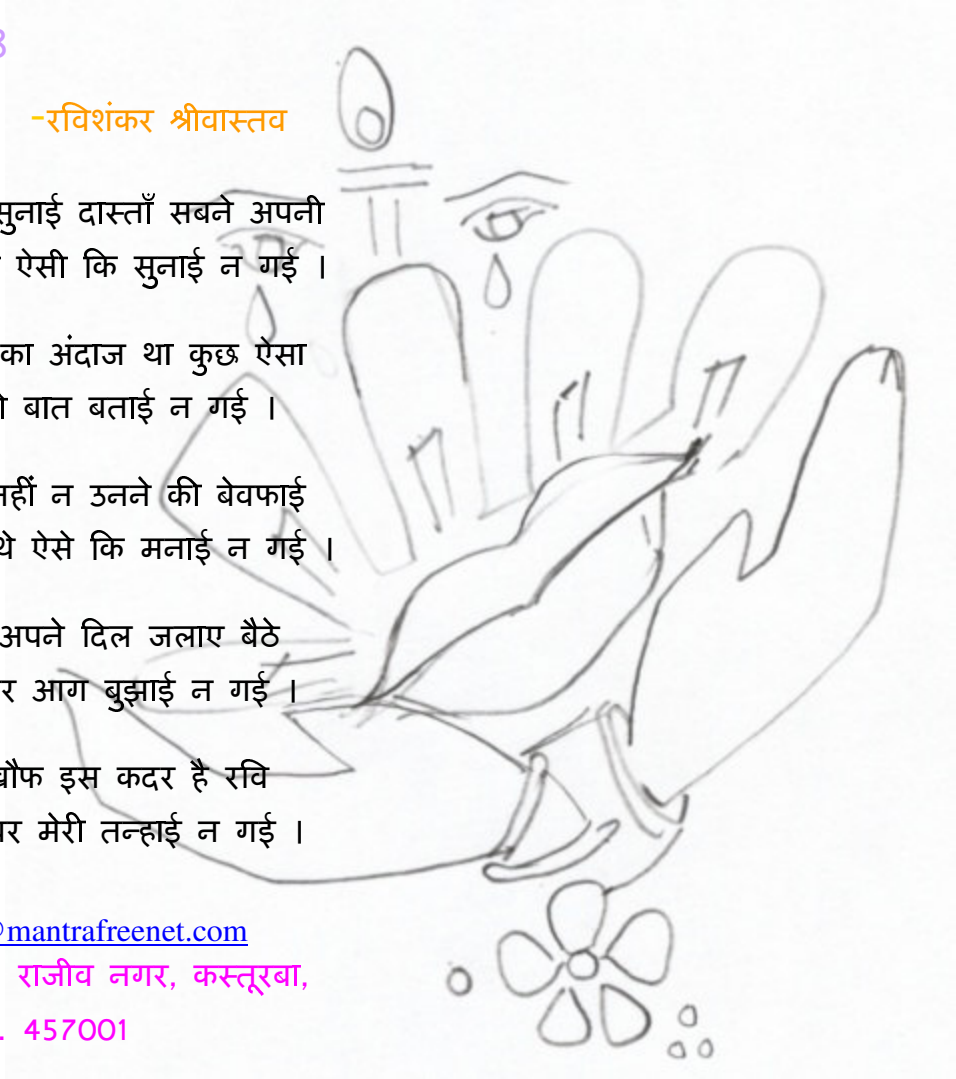

महफिल में सुनाई दास्ताँ सबने अपनी
हम पे गुजरी ऐसी कि सुनाई न गई ।

उनके पूछने का अंदाज था कुछ ऐसा
कोई सूरत वो बात बताई न गई ।

उनका दोष नहीं न उनने की बेवफाई
हम ही रूठे थे ऐसे कि मनाई न गई ।

दीवानगी में अपने दिल जलाए बैठे
होश आया पर आग बुझाई न गई ।

तन्हाई का खौफ इस कदर है रवि
वो आ गए पर मेरी तन्हाई न गई ।

raviratlami@mantrafreenet.com
100, सुकृति, राजीव नगर, कस्तूरबा,
रतलाम म.प्र. 457001